१४. एक और आजादी की लड़ाई

'गो-सुषमा' के घर-घर पहुँचने से हर बस्ती-गाँव-कस्बे-शहर में लोगों में हलचल शुरू हुई। शुरुआत बच्चों से हुई।

दूसरा गौभक्त
पिताजी! आप हमारे लिए इतनी मेहनत करते हैं, लेकिन गायें कटती रही तो कल हमें दूध-दही-घी और शुद्ध-सात्विक-स्वादिष्ट अन्न कैसे मिलेगा? करना ही है, तो ऐसा कुछ कीजिये कि हमें हमेशा गायों का लाभ मिलता रहे।

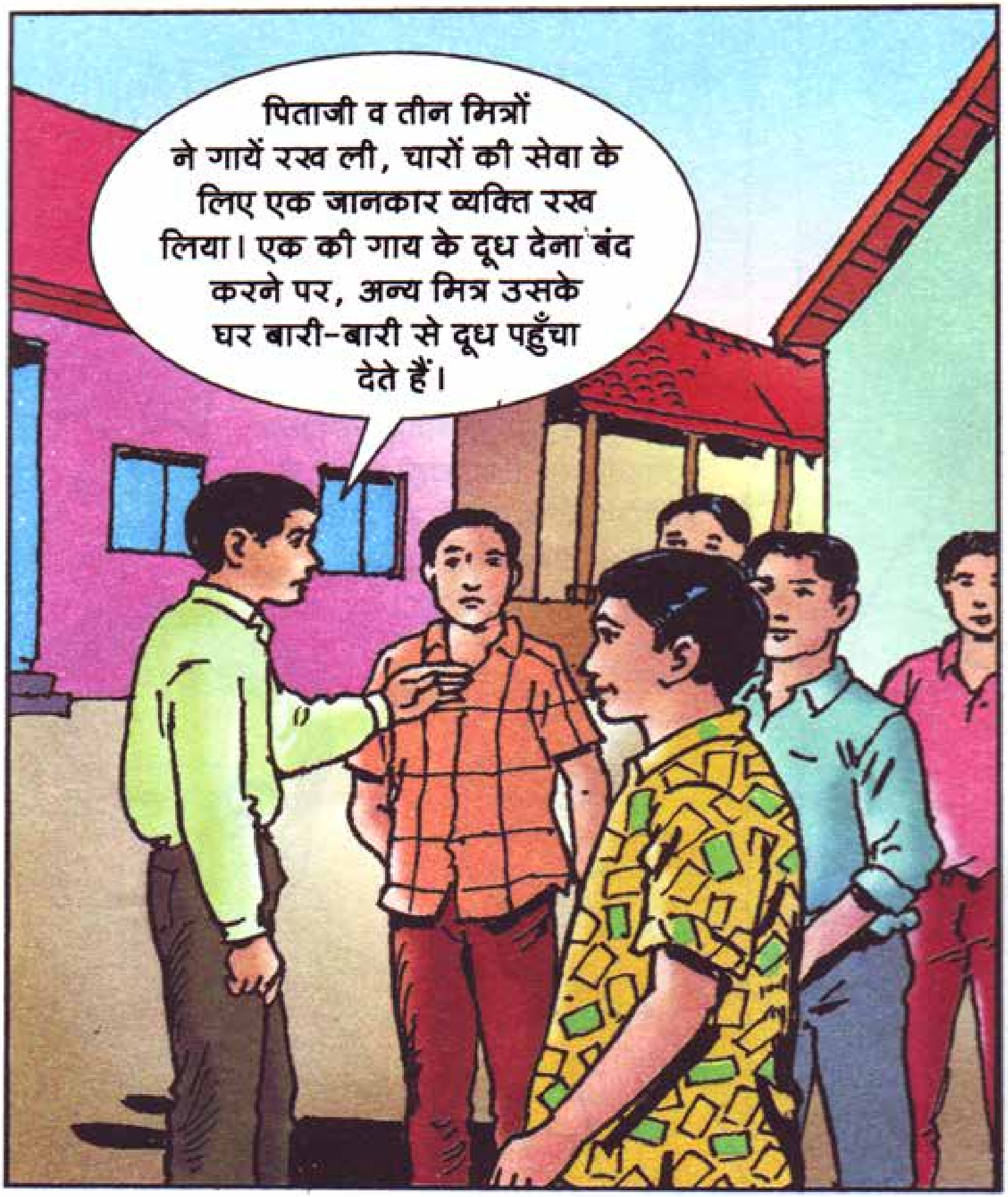
पिताजी व तीन मित्रों ने गायें रख ली, चारों की सेवा के लिए एक जानकार व्यक्ति रख लिया। एक की गाय के दूध देना बंद करने पर, अन्य मित्र उसके घर बारी-बारी से दूध पहुँचा देते हैं।

तीसरा गौभक्त
हमारी कॉलोनी में घरों में गाय रखने की जगह नहीं। मैं पूरी कॉलोनी के 900 घरों में 'गो-सुषमा' बेचकर आया। फिर पिताजी ने सबकी बैठक बुलाई।

बैठक में
हम पास के सुखरामजी गूजर की एक-एक गाय के पालक बन जाते हैं।
हम रोज उससे गोमूत्र लेंगे, बदले में प्रत्येक हर माह उसे 90 किलो तिल की खली देंगे।
इससे तेल-घाणी के बैल को रोजगार मिलने से बैल रक्षा भी होगी और हमें घाणी का पौष्टिक तेल भी मिलेगा।
वाह! इससे घी भी अच्छा निकलेगा, यह दूध हम भैंस के दूध से भी दो रुपये अधिक देकर खरीदेंगे।
गोग्रास की रोटी, फल-सब्जी के छिलके और बची हुई रसोई गाय को दे देंगे। फ्रिज बीमारी का घर है, उसमें कोई चीज नहीं रखेंगे।

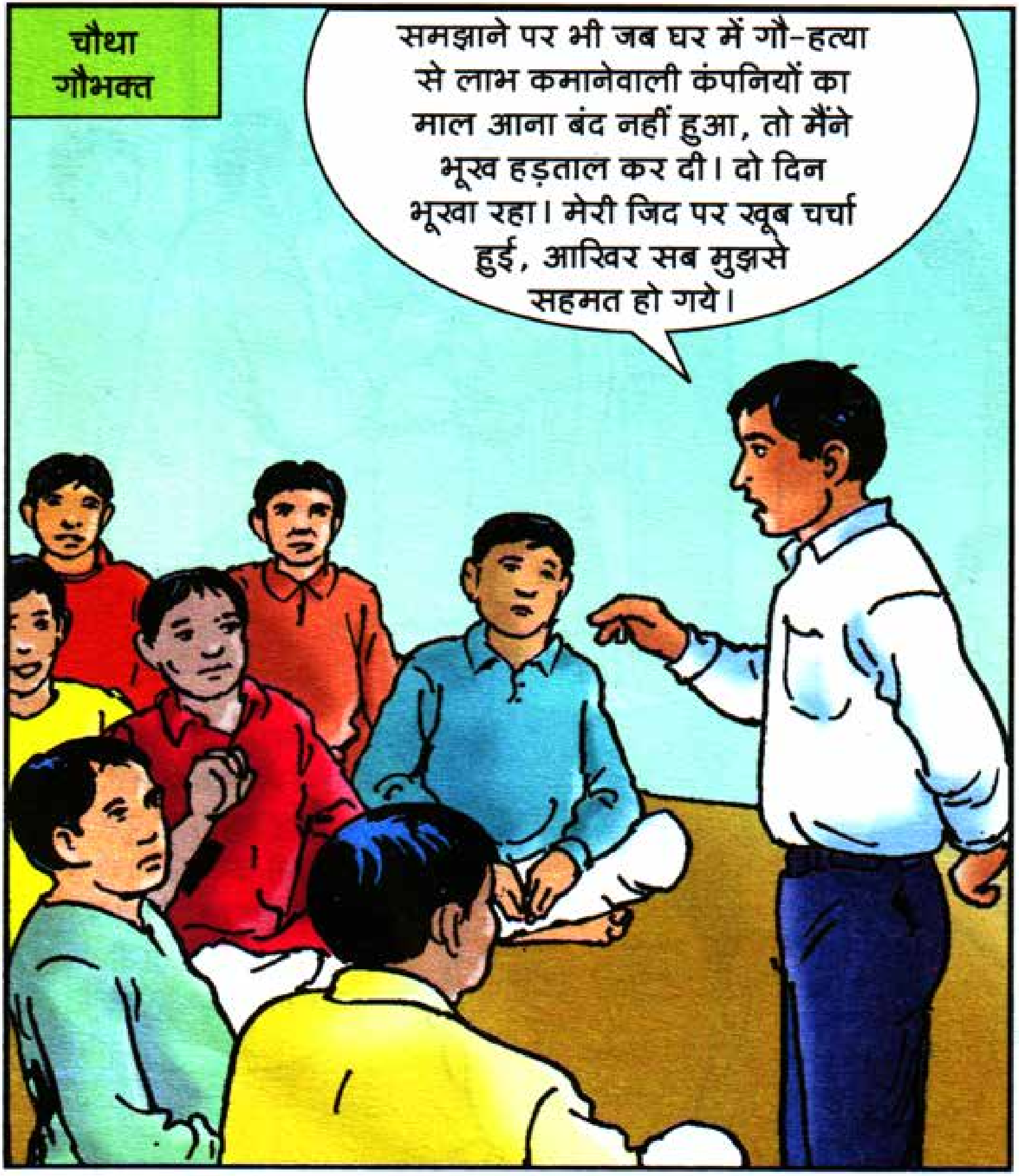
चौथा गौभक्त
समझाने पर भी जब घर में गौ-हत्या से लाभ कमानेवाली कंपनियों का माल आना बंद नहीं हुआ, तो मैंने भूख हड़ताल कर दी। दो दिन भूखा रहा। मेरी जिद पर खूब चर्चा हुई, आखिर सब मुझसे सहमत हो गये।

पाँचवाँ गौभक्त

रमाकांतजी ने शिक्षा पूरी कर कमाई के अच्छे अवसर छोड़ मामूली मानधन लेकर गोरक्षा के कार्य में अपना जीवन लगाकर आदर्श गोशाला खड़ी करने में सहयोग किया। मेरी भी शिक्षा का अंतिम वर्ष है, मैं भी यही करूँगा।

बच्चों द्वारा चलाये इस आंदोलन में धीरे-धीरे बड़े भी जुड़ गये।
हमने एक 'गो-सुषमा मंडल' बनाया है, इसके सदस्य गौ-हत्यारी कंपनियों के पूर्ण बहिष्कार का संकल्प लेते हैं। मंडल इन्हें इनके गोरक्षक विकल्प; जैसे काढ़ा-चूर्ण, गोमय दंत-मंजन, चर्बी मुक्त सौंदर्य प्रसाधन,खून-हड्डी मुक्त गोमूत्र-औषधियाँ,जैविक आहार, घाणी का तेल, दूध-घी आदि उपलब्ध कराता है।
गायें पॉलिथीन की थैलियाँ खा-खाकर मर जाती हैं, इसलिए मैंने कपड़ों की थैलियों का प्रचार किया। इससे यह समस्या तो हल हो ही गई, कई गरीब महिलाओं को रोजगार भी मिल गया।
गौ-हत्यारी नीतियों के कारण गोपालक को एक गाय पर प्रतिदिन २० रु. अर्थात् हर वर्ष ७,००० रु. का नुकसान होता है। दूध देना बंद करने पर गाय पालना उसके लिए कठिन हो जाता है।
आंदोलन बढ़ते-बढ़ते महानगरों और विदेशों में भी पहुँच गया।
मैं अपने गाँव के गोपालक की एक गाय का सेवक बन हर वर्ष ७,००० रु. भेजूँगा।
मैं १० एकड़ जमीन खरीद उसे गोचर के रूप में विकसित करूँगा।
मैं हम जैसे १० गौ-सेवकों को जगाऊँगा।

मैं अपने गाँव के किसानों को बैलों से चलनेवाले ट्रैक्टर, मोटर, जनरेटर आधी कीमत पर उपलब्ध कराऊँगा।
यह तो सरकार पर जोर देकर भी कराया जा सकता है।
जिस तंत्र ने किसानों-गोपालकों को बर्बाद किया। उसका सहारा लेना, उसे बढ़ावा देना है। हमारे अन्नदाता को हम सहारा देंगे।
मैं बैलों की जोड़ी रखनेवाले किसानों को ५,००० रु. हर वर्ष दूँगा।

''मैं गव्य-चिकित्सा का प्रशिक्षण देनेवालों के शिबिर करवाकर सहयोग दूँगा।''
गव्य-चिकित्सा शिबिर

''मैं गरीब बस्तियों में स्वास्थ्य शिबिर लगवाकर पंचगव्य औषधियों को आधी कीमत पर उपलब्ध करवाऊँगा।''

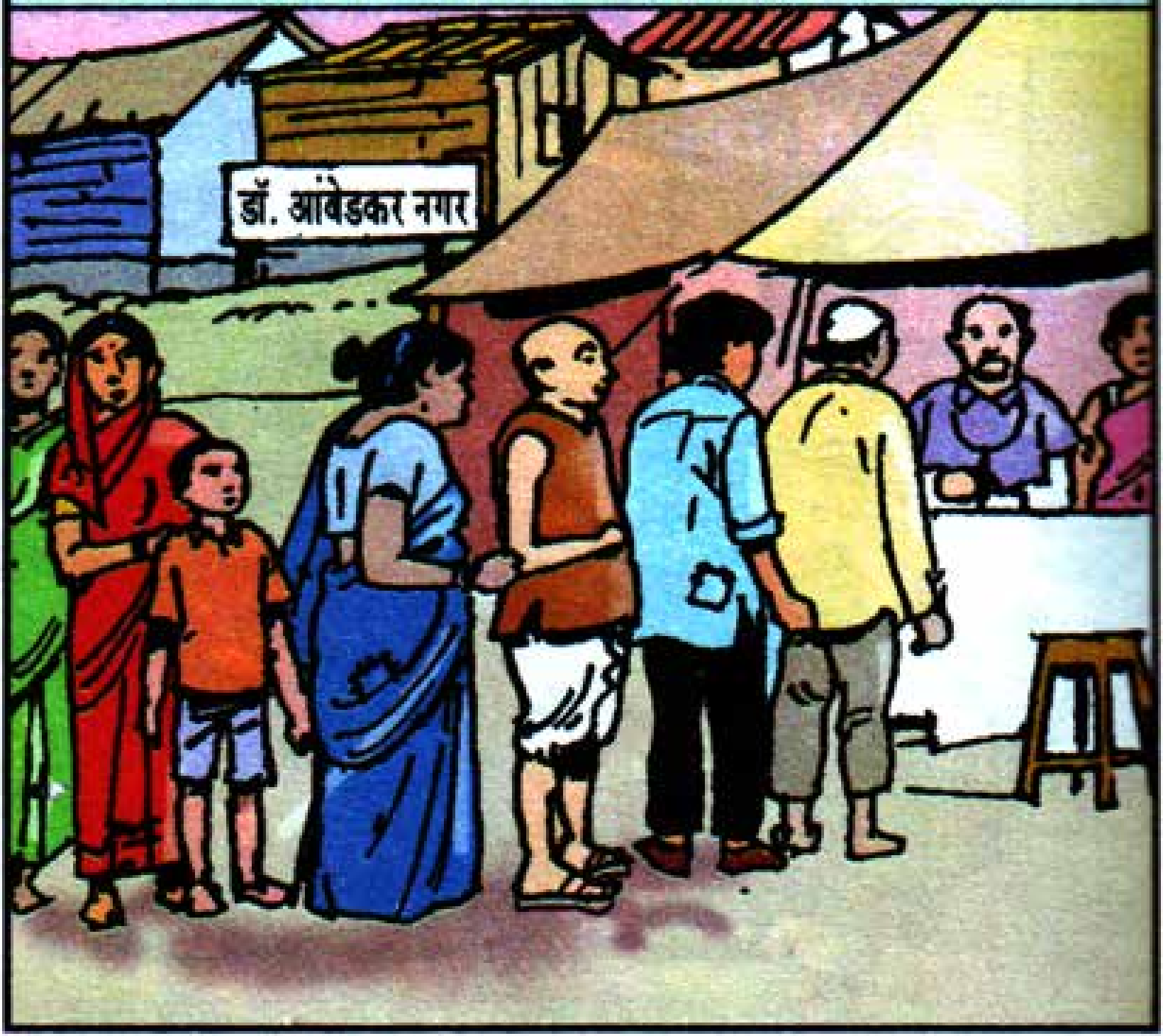

कुछ गोशालाएँ कुशल गोशाला प्रबंधकों को २०-२५ हजार रुपये वेतन देने को तैयार है। कोई 'गोशाला मैनेजमेंट' का प्रशिक्षण शुरू करे, तो मैं उसे सहयोग दूँगा। इससे गाँव की प्रतिभाओं को गाँव में रहकर भी आगे बढ़ने का अच्छा अवसर मिलेगा।

और इस तरह गाय को केन्द्र में रखकर स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों के माध्यम से भारत में भारतीय व्यवस्थाओं की स्थापना के लिए एक और आजादी की लड़ाई शुरू हुई। कंपनियों ने भी अपने अस्तित्व को खतरे में देख मायावी युद्ध शुरू कर दिया। उन्होंने क्या-क्या हथकंडे अपनाये और विद्यार्थियों ने कैसे उनका उत्तर दिया पढ़ें, गो-सुषमा (भाग-२)में।